श्री चौबीसी आराधना

संकलक
आर्यिका सरलमती जी

प्रकाशक
श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	श्री चौबीसी आराधना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
पावन प्रेरणा	:	आर्यिका माँ १०५ ऋजुमती माताजी
संकलक	:	आर्यिका १०५ सरलमतीजी
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, २०२०
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

सुम्मी जैन, शिवपुरी

दिलीप-अन्जू अग्रवाल (जैन), झाँसी

दिव्यांश, वेदान्त, आदविक

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

❑❑❑

अभिषेक स्तुति

(लय—जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ-हाँ-२, सब- रोज कराओ रे॥
प्रासुक जल से...॥

ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ-२, सब शीश झुकाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥१॥

देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ-२, सब मिलकर गाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥२॥

रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ-२, सब पुण्य कमाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥३॥

भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ-२, सब होड़ लगाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥४॥

फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ-२, जयकार लगाओ रे...।
प्रासुक जल से...॥५॥

प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ-२, सब करो कराओ रे...।
प्रासुक जल से...॥६॥

❑ ❑ ❑

श्री चौबीसी पूजन

(मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चन्दन सम प्रभु के धाम, चन्दन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चन्दन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदन...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बंध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाये जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएं आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमंलमंडिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममंलमंडिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमंलमंडिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमंलमंडिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमंलमंडिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥

जय सुविधिनाथ दें सुविधि नाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्म छाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित बसन्त, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय रिद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑❑❑

श्री वृषभनाथ भगवान—अर्घ्य

१. (दोहा)

आदिम तीर्थंकर प्रभो, आदिनाथ मुनिनाथ।
आधि व्याधि अघ मद मिटे, तुम पद में मम माथ॥
वृष का होता अर्थ है, दयामयी शुभधर्म।
वृष से तुम भरपूर हो, वृष से मिटते कर्म॥
दीनों के दुर्दिन मिटें, तुम दिनकर को देख।
सोया जीवन जागता, मिटता अघ अविवेक॥
शरण-चरण हैं आपके, तारण-तरण जहाज।
भव दधि तट तक ले चलो, करुणाकर जिनराज॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

वृषभनाथ तुम तीर्थंकर बन, आदिनाथ पद प्राप्त किया।
असि मसि आदिक षट् कर्मों का, प्रजाजनों को ज्ञान दिया॥
इस धरती पर प्रथम आपने, धर्मध्वजा को फहराया।
इसी ध्वजा की छत्र-छाँव में, मैं तुम सा बनने आया॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशे दुख द्वन्द दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

इस अवसर्पिणी में इस भू पर, वृषभनाथ अवतार लिया।
भर्त्ता बन युग का पालन कर, धर्म तीर्थ का भार लिया॥
अंत-अंत में अष्टापद पर, तप का उपसंहार किया।
पाप मुक्त हो मुक्ति सम्पदा, प्राप्त किया उपहार जिया॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (वीर)

स्वयं बोध से बोधित होकर, आदि पुरुष आदि कर्त्तार।
भोले-भाले मानुष जन को, षट्कर्मों का दिया विचार॥
तथा बाद में प्रबुद्धजन को, बने मोक्षमार्ग दातार।
वंदनीय आदीश प्रभु को, करूँ वंदना बारंबार॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (वीर)

शुचि निर्मल नीर गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हर्षाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

देख सामने
प्रभु के दर्शन हैं
भूत को भूल

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

हार जीत से हो परे, हो अपने में आप।
विहार करते अजित हो, यथा नाम गुण छाप॥
पुण्य पुंज हो पर नहीं, पुण्य फलों में लीन।
पर पर पामर भ्रमित हो, पल-पल पर आधीन॥
जित इन्द्रिय जित मद बने, जितभव विजित कषाय।
अजितनाथ को नित नमूँ, अर्जित दुरित पलाय॥
कोंपल पल-पल को पले, वन में ऋतुपति आय।
पुलकित मन जीवन लता, मन में जिनपद पाय॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

रागद्वेष मय राजाओं को, सहज रूप से जीत लिया।
अजितनाथ यह नाम आपने, सार्थक करके दिखा दिया॥
मुझको भी ऐसा बल दे दो, कर्म विजेता बन जाऊँ।
नाम आपका जपूँ निरंतर, जब तक शिवसुख ना पाऊँ॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (हरिगीतिका)

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

कामदेव को जीतने वाले, बने जितेन्द्री हैं जिनवर।
सब जीवों के सुखदाता तुम, इन्द्रों से अर्चित प्रभुवर॥
कर अभिषेक मेरु पर्वत पर, क्षीरोदधि का लेकर नीर।
शुद्धभाव से अजितनाथ को, नमन करूँ हर लूँ भव पीर॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (सखी)

अब तक कई अर्घ्य चढ़ाए, प्रभु एक नहीं मन भाए।
वसु द्रव्य चढ़ाए आगे, यह दास चरण सिर नाए॥
श्री अजितनाथ जिनराजा, मेरे उर माहिं समा जा।
यहाँ कोई नहीं सहारा, प्रभु तारण तरण जहाजा॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (त्रिभंगी)

जलफल सब सज्जे, बाजत बज्जे, गुनगनरज्जे मनमज्जे।
तुम पदजुगमज्जे, सज्जन सज्जे, ते भव भज्जे निजकज्जे॥
श्री अजित जिनेशं, नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता, त्रिभुवत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

श्री शम्भवनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

भव-भव-भव में भ्रमित हो, भ्रमता-भ्रमता आज।
शम्भव जिन भव शिव मिले, पूर्ण हुआ मम काज॥
क्षण-क्षण मिटते द्रव्य हैं, पर्यय वश अविराम।
चिर से हैं चिर ये रहें, स्वभाव वश अभिराम॥
परमारथ का कपन यूँ, मथन किया स्वयमेव।
यतिपन पालें यतन से, नियमित यदि हो देव॥
तुम पद पंकज से प्रभु, झर-झर झरी पराग।
जब तक शिव सुख ना मिले, पीऊँ षट्पद जाग॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

किये असंभव कार्य आपने, नर जीवन को पाकर के।
राज राग तज बैठ गये हो, सिद्धालय में जाकर के॥
शम्भव जी जिन! बालक हूँ मैं, मुझको भी तुम सम्बल दो।
भव बंधन तज झट से मुझको, पास आपके आने दो॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्गुरु अपनाए।
सद्गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम आए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएं, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

भव आक्रन्दन से बचने को, सतत ध्यान में हुए सुलीन।
भव की बेली विधि बंधन को, ध्यान अग्नि से किया विलीन॥
अनुपम अक्षयनिधि सम जो है, मोक्ष महापद को पाए।
नमन करूँ अनुराग भाव से, शम्भव जिन को सिर नाए॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (चौबीसीवत्)

पर द्रव्यों की अभिलाष, अब तक मापी है।
आतम अनर्घ की बात, नहीं सुहायी है॥
हे करुणा के अवतार, संभव जिन स्वामी।
दो शाश्वत सुख हितकार हे अंतर्यामी॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (ज्ञानोदय)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य किया।
तुमको अरपों भाव भगतिधर, जै जै जै शिव-रमणि पिया॥
संभव जिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै।
निजनिधि ज्ञानदरश सुखवीरज, निराबाध भविजन सुख पावै॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

आशा जीतना
श्रेष्ठ निराशा से तो
सादगी भली

श्री अभिनंदन नाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

गुण का अभिनंदन करो, करो कर्म की हानि।
गुरु कहते गुण गौण हो, किस विध सुख हो प्राणी॥
चेतन वश तन शिव बने, शिव बिन तन शव होए।
शिव की पूजा बुध करें, जड़ जन शव पर रोए॥
विषयों को विष लख तजूँ, बनकर विषयातीत।
विषय बना ऋषि ईश को, गाऊँ उनका गीत॥
गुण धारे पर मद नहीं, मृदुतम हो नवनीत।
अभिनंदन जिन! नित नमूँ, मुनि बन मैं भवभीत॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

भव-आक्रंदन से डरकर के, शिव नन्दन वन चले गए।
अभिनंदन जी! अभिनंदन के, योग्य आप्त पद प्राप्त किए॥
चंदन कुंदन अभिनंदनसे, नहिं राग अब बन्धन से।
हे अभिनंदन मुझे बचाओ, कर्म जाल के बन्धन से॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (सखी)

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न न समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनंदन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

शुभ रजनी की शुभ बेला में, शुभमय थे संकेत दिखे।
गज अग्नि आदिक सोलह जो, जगमाता को स्वप्न दिए॥
हुए पंचकल्याणक जिनके, मोक्षमहल को किए गमन।
प्रमुदित भावों से मैं करता, अभिनंदन प्रभु को वंदन॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (जोगीरासा)

प्रभो! आपके दर्शन पाकर, निजदर्शन अब भाया।
सिद्धक्षेत्र का आसन पाने, अर्घ्य सजा के लाया॥
हे! अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (हरिगीतिका)

अष्टद्रव्य संवारि सुंदर, सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय-नाय सुभाल ही॥
कलुषताप निकंद श्री अभिनंद, अनुपम चंद है।
पद द्वंद वृन्द जजे प्रभु, भवदंद फंद निकंद है॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

कपूर सम
बिना राख बिखरा
सिद्धों का तन

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

बचूँ अहित से हित करूँ, पर न लगा हित हाथ।
अहित साथ ना छोड़ता, कष्ट सहूँ दिन-रात॥
बिगड़ी धरती सुधरती, मति से मिलता स्वर्ग।
चारों गतियाँ बिगड़ती, पा अघ मति संसर्ग॥
सुमतिनाथ प्रभु सुमति हो, मम मति है अतिमंद।
बोधकली खुल-खिल उठे, महक उठे मकरंद॥
तुम जिन मेघ-मयूर मैं, गरजो वरसो नाथ।
चिर प्रतीक्षित हूँ खड़ा, ऊपर करके माथ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

लेकालोकालोकित होता, प्रभो अलोकिक तव मति में।
इसीलिये तो पूज्य हुए हो, सुमतिनाथ जी चहुँ गति में॥
तुम्हें देखकर खिल जाती है, कली सुमति की जन मन में।
मेरी मति भी बने अलौकिक, बैठो प्रभुजी मम मन में॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (सखी)

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बंध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े॥

अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

दुर्गति हरना सदगति पाना, सभी प्राणियों का सपना।
वह साकार कराने तुमने, सबको बना लिया अपना॥
सुमति विधाता सदगति दाता, सुमतिनाथ जिननाथ रहे।
पंचमगति पाने को अपने, जिनको नम्र नमोऽस्तु रहे॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (आँचलीबद्ध चौपाई)

प्रभु पद का जो ध्यान लगाय, शिव अनमोल रतन शुभ पाय,
सुमति दातार, हे! जिनराज करो भवपार।
जिन पूजा है जग में सार, किया न अब तक आत्म विचार,
सुमति दातार, हे! जिनराज करो भव पार॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (वीर)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप फल सकल मिलाय।
नाचि राचि शिरनाय चमर सों, जय जय जय जय जिनराय॥
हरिहर पंडित पाप निकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय।
तुम पद पद्म सद्म शिवदायक, जजत मुदितमन उचित सुभाय॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री पद्मप्रभु भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

निरी छटा ले तुम छठे, तीर्थंकरों में आप।
निवास लक्ष्मी के बने, रहित पाप संताप॥
हीरा-मोती पद्म ना, चाहूँ तुमसे नाथ।
तुम सा तम-तामस मिटा, सुखमय बनूँ प्रभात॥
शुभ सरल तुम बाल तव, कुटिल कृष्ण तम नाग।
तव चिति चित्रित ज्ञेय से, किन्तु न उसमें दाग॥
विराग पद्मप्रभु आप के, दोनों पाद सराग।
रागी मम मन जा वहीं, पीता तभी पराग॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

पद्म प्रभु तव पाद पद्म से, पराग अनुपम झरता है।
तीन लोक में पराग ऐसा, अन्य कहीं नहिं मिलता है॥
सुरनर मुनि गण पशु गण भी सब, षट्पद बनकर आते हैं।
इसका सेवन कर-करके ही, सुर सुख शिव सुख पाते हैं॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (वसन्ततिलका)

ये नीर चन्दन चढ़े जब द्रव्य-भावी।
तो ही विभाव नशते बनते स्वभावी॥
पाएँ स्वभाव निजभाव समृद्धिरस्तु।
सो भक्त पद्मप्रभु को करते नमोऽस्तु॥

(दोहा)

इस अनन्त संसार में, पूज्य पद्मप्रभु नाथ।
कोई अपना है नहीं, अतः दीजिए साथ॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

जगतपिता के गृह आँगन में, गर्भ पूर्व छह मास कहे।
गर्भ सहित कुल पंद्रह महिने, रत्न अद्‌भुत बरस रहे॥
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर ने, दिव्य रत्न नित्य वरसाए।
प्रमुदित मन से पद्मप्रभु को, भक्तिभाव से सिर नाए॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

जल से फल का वैभव सारा, आज चढ़ाने आया हूँ।
निज अनर्घपद होना स्वामी, भाव संजोकर लाया हूँ॥
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शान्ति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (लावनी)

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगत भाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय॥
मन-वच-तन त्रयधार देत ही, जन्म-जरा-मृत जाय।
पूजों भावसों, श्री पद्मनाथपद सार पूजों भावसों॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

यथा सुधाकर खुद सुधा, वर्षाता बिन स्वार्थ।
धर्मामृत वरसा दिया, मिटा जगत का आर्त्त॥
दाता देते दान हैं, बदले की न चाह।
चाह दाह से दूर हो, बड़े-बड़ों की राह॥
अबंध भाते काटके, वसु विध विधि का बंध।
सुपार्श्व प्रभु निज प्रभुपना, पा पाए आनंद॥
बाँध-बाँध विधि बन्ध में, अंध बना मतिमंद।
ऐसा बल दो अंध को, बंधन तोडूँ द्वन्द्व॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

सुपार्श्व स्वामी सहन किये तुम, उपसर्गों की बाधाएँ।
तव दर्शन से मिल जाती है, मुझको शिव पथ सुविधाएँ॥
तीन लोक की त्रिकालवर्ती, सर्व द्रव्य गुण पर्यायें।
एक साथ तुम देख रहे हो, बिना किये कुछ क्रियायें॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (शार्दूलविक्रीड़ित)

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गायेंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आयेंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥

आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस, प्रभो! अक्षय श्रद्धा करें।
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सकें, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्व की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बन के पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

तन भी सुन्दर मन भी सुन्दर, चेतन भी तो सुन्दर हैं।
जो सुन्दरता की मूरत हैं, वही सुपार्श्व जिनेश्वर हैं॥
जिन्हें नमन वंदन करने से, भक्त परम सुन्दर होते हैं।
सो सुन्दर चेतन पाने को, नमोऽस्तु के अभिमुख होते॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (शेर)

आप ही मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी 'महा', भव से तारो मुझे मैं व्यथित हूँ यहाँ।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो, अर्चना से जिनेश्वर बनूँगा विभो॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (आँचलीबद्ध)

जल फल आदि सजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय,
दयानिधि हो, जय जग बंध दया निधि हो।
तुम पद पूजों मन-वच-काय, देव सुपारश शिवपुर राय,
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

===

श्री चंद्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

सहन कहाँ तक अब करूँ, मोह मारता डंक।
दे दो इसको शरण ज्यों, माता सुत को अंक॥
कौन पूजता मूल्य क्या, शून्य रहा बिन अंक।
आप अंक हैं शून्य मैं, प्राण फूँक दो शंख॥
चंद्र कलंकित किन्तु हो, चंद्रप्रभु अकलंक।
वह तो शंकित केतु से, शंकर तुम निःशंक॥
रंक बना हूँ मम अतः, मेटो मन का पंक।
जाप जपूँ जिन नाम का, बैठ सदा पर्यंक॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

सकल लोक ही चमक रहा है, चंद्रप्रभो तब आभा से।
तुम्हें देखकर भाग रहे हैं, सूर्य चंद्र भी लज्जा से॥
ज्ञान कुमुदिनी खिल जाती है, एक बार तव दर्शन से।
मिले न क्या फिर शिव सुख मुझको, बार-बार तव सुमिरन से॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम चंद्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

सुंदर प्रातिहार्य से शोभित, महान अतिशय वाले हो।
गुण प्रवीण हो करके प्रभुवर, दोष मूल के नाशक हो॥
बीजों के मोहांधकार क्षय, करने वाले दीपक ओ।
भाव-भक्ति से नमन करूँ मैं, चंद्रप्रभु के चरणों में॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (त्रिभंगी)

हम दास तिहारे, आये द्वारे, सिद्धक्षेत्र में वस जाएँ।
पद अर्घ्य चढ़ाए, शरणे आए, चंद्रप्रभ सम बन जाएँ॥
अष्ठम तीर्थंकर, घातिक्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चंद्रप्रभ सुखदाई॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (लय-चौबीसीवत्...)

सजि आठों दरव पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों॥
श्री चंद्रनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगे।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगै॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

सिर में चाँद
अच्छा निकल आया
सूर्य न उगा

श्री पुष्पदंत (सुविधिनाथ) भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

सुविधि! सुविधि के पूर हो, विधि से हो अति दूर।
मम मम से मत दूर हो, विनती हो मंजूर॥
किस वन का माली रहा, मैं तुम गगन विशाल।
दरिया में खस खस रहा, दरिया मौन निहार॥
फिर किस विधि निरखूँ तुम्हें, नयन करूँ विस्तार।
नाचूँ गाऊँ ताल दूँ, किस भाषा में ढाल।
बाल मात्र भी ज्ञान ना, मुझमें मैं मुनि बाल।
बवाल भव का मम मिटे, तुम पद में मम भाल॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

विविध-विविध तम विधि अपना, कर विधि मल से अति दूर हुए।
सुविधिनाथ जी! इस विध तुम तो, सकल सुधी के पूर हुए॥
ऐसी सुविधा मुझे बता दो, हे! जिनवर अंतर्यामी।
मंदमती का बालक हूँ मैं, बनूँ शीघ्र तुम सा नामी॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (सखी)

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुंदर अर्घ्य बना के।
कई बार चढ़ाए लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आये हैं घबरा के, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥

अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुला के, चेतन का रूप सँवारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुका कर शीश।
धर्म धार टूटे नहीं, मिल यही आशीष॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

ज्यो काँटो में पुष्प महकते, खिलकर करे जगत सुन्दर।
पुष्पदन्त प्रभु नाथ दिए यों, सुविधी चेतना का मंदिर ॥
जिनके नाम मात्र का सुमरण, दुख दरिद्र काँटे हरता।
अतः भक्त मन वचन काय से, सादर नमोऽस्तु भी करता॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (अडिल्ल)

जग में सबका मूल्य आप अनमोल हैं, अनर्घपद पाने को जिनवर ठौर हैं।
सुविधिनाथ जिनराज शरण में आ गया, करुणा सागर दयासिंधु मन भा गया॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (लावनी)

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन-वच-तन हुलसाय।
तुम पद पूजों प्रीति लायकै, जय जल त्रिभुवनराय॥
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनराय जी, मेरी.....

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

चिंता छूती कब तुम्हें, चिंतन से भी दूर।
अधिगम में गहरे गये, अव्यय सुख के पूर॥
युगों-युगों से युग बना, विघ्न अघों का गेह।
युगद्रष्टा युग में रहें, पर न अघ से नेह॥
शीतल चंदन है नहीं, शीतल हिम ना नीर।
शीतल जिन तब मत रहा, शीतल हरता पीर॥
सुचिर काल से मैं रहा, मोह नींद से सुप्त।
मुझे जगाकर कर कृपा, प्रभो करो परितृप्त॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

वीतराग मय विशाल नभ में, शीतल-शशि सम शोभ रहे।
स्याद्वाद की किरणों से तुम, मिथ्यातम को भगा रहे॥
चंदन तरु सम चरण आपके, देते सबको शीतलता।
शीतल जिनजी! शीतल कर दो, मेरी भव की दाहकता॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

प्रभु की वाणी जन कल्याणी, व्रत संयम का करें बखान।
क्षमा धर्म से ब्रह्मचर्य तक, पाले सुधि जन बने महान्॥
जिनशासन के जिननायक के, चरणों में शीतल छाया।
प्रभु शीतल को नमन करूँ में, मिट जावे भव दुख बाधा॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (लय-चौबीसीवत्...)

शुभ अर्घ्य बनाकर ईश, चरणों में लाए।
भक्तों के भाव मुनीश, आप समझ जाएँ॥
शीतल जिनराज महान, दर्शन सुखकारी।
हैं अनन्त गुण की खान, भवजन हितकारी॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (वसन्ततिलका)

कुंश्री फलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे॥
रागादि दोष मल मर्दन हेतु येवा।
चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

राग द्वेष और मोह ये, होते कारण तीन।
तीन लोक में भ्रमित यह, दीन हीन अघ लीन॥
निज क्या पर क्या स्व-पर क्या, भला बुरा बिन बोध।
जिजीविषा ले खोजता, सुख ढोता तन बोझ॥
अनेकान्त की कान्ति से, हटा तिमिर एकांत।
नितांत हर्षित कर दिया, क्लान्त विश्व को शांत॥
निःश्रेयस सुख धाम हो, हे जिनवर श्रेयांस।
तव थुति अविरल में करूँ, जब लौ घट में श्वांस॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

श्रमण और श्रावक जन सारे, आश्रय तेरे पाकर के।
निःश्रेयस सुख पा जाते हैं, भव सागर को तिर करके॥
अनाथ जन के आश्रय दाता, हे जिनवर! श्रेयांस प्रभो।
श्रेयस्कर मम जीवन कर दो, पाऊँ श्रेयस में सुख को॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (आँचलीबद्ध चौपाई)

आठों द्रव्य चढ़ें मनहार, जिनमें आतम का त्यौहार,
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार।
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हमको भी दो करुणाधार,
करो स्वीकार, वंदन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

क्रोध कलुषता के नाशन को, क्षमा शीतलता धर उर में।
हो प्रसन्न एकाग्रचित्त हो, ध्यान किया निज आतम में॥
द्वादशांग वाणी को सुनकर, गणधर आदिक हर्षाए।
नमस्कार कर श्रेयनाथ को, जो मेरे मन को भाए॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (चामर)

स्वानुभूति दिव्य अर्घ्य आपके समीप हैं।
क्या चढ़ाऊँ नाथ अर्घ्य आपको विदित है॥
सिद्ध पद के हेतु प्रभु आ गया शरण।
हे! श्रेयनाथ दूर कीजिए जनम मरण॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (हरिगीतिका)

जलमलय-तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चरचों चरन जुगप्रभु मोहि तार उतावली॥
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन वंद आनंद कंद है।
दुखदंद फंद निकंद पूरनचंद जोति अमंद है॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

आस्था व बोध
संयम की कृपा से
मंजिल पाते

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

औ न दया बिन धर्म ना, कर्म कटे बिन धर्म।
धर्म मर्म तुम समझकर, कर लो अपना कर्म॥
वासुपूज्य जिनदेव ने, देकर यूँ उपदेश।
सबको उपकृत कर दिया, शिव में किया प्रवेश॥
वसुविध मंगल द्रव्य ले, जिन पूजो सागार।
पाप घटे फलतः फले, पावन पुण्य अपार॥
बिना द्रव्य शुचि भाव से, जिन पूजो मुनि लोग।
बिन निज शुभ उपयोग के, शुद्ध न हो उपयोग॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

बारहवें जिन वासुपूज्य हैं, परम पूज्य के पुंज हुए।
पाँचों कल्याणों में जिनको, सुरपति पूजक पूज गए॥
चम्पापुर में पूर्ण रूप से, कर्मों पर बहु वार किये।
परमोत्तम पद प्राप्त किये औ, विपदाओं के पार गये॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

अष्ट कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्ट द्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा सदा॥
आत्म द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों का हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥

(दोहा)

तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

मुक्ति रमा से ब्याह रचाने, निकल पड़े थे भगवंता।
रत्नत्रय का मुकुट बनाकर, सिर पर धरे जयवंता॥
आकण्ठित कर मुक्ति वधु को, बने श्रेष्ठ तुम श्रीकंता।
यथाशीघ्र श्री वासुपूज्य को, मन-वचन तन से मैं नमता॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (हरिगीतिका)

हो आप सर्व समर्थ जिनवर, अर्घ्य क्या अर्पण करूँ।
प्रभु आप ही के नंत गुण का, रात दिन सुमिरन करूँ॥
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (जोगीरासा)

जल फल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपद राज हेतु हे श्रीपति! निकट धरो यह लाई॥
वासुपूज्य वसु पूज तनुज पद, वासव सेवत आई।
बाल ब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑❑❑

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

काया कारा में पला, प्रभु तो कारातीत।
चिर से धारा में पड़ा, जिनवर धारातीत॥
कराल काला व्याल सम, कुटिल चाल का काल।
विष विरहित उसको किया, किया स्वप्न साकार॥
मोह अमल वश समल बन, निर्बल मैं भयवान।
विमलनाथ तुम अमल हो, संबल दो भगवान॥
ज्ञान छोर तुम मैं रहा, ना समझ की छोर।
छोर पकड़कर झट इसे, खींचो अपनी ओर॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

द्रव्य भाव अरु नोकर्मों से, विमलनाथ तुम अमल हुए।
सकल लोक अवलोकन करने, सकल ज्ञान से प्रबल हुए॥
पूर्ण विश्व ही झलक रहा है, युगपत तब धी-दर्पण में।
अतः आपके चरण कमल पर, जीवन किया समर्पण मैं॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहीं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ चढ़ा के, शीश झुकाके गुण गाएँ॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

धर विवेक उत्कृष्ट ज्ञान से, ध्यान स्वात्म का खूब किया।
हितोपदेशक वाणी को सुन, मिथ्यातम को दूर किया॥
अष्ट कर्म के नष्ट करने को, शिवपथ चल शिव सुख पाया।
करूँ श्री विमलनाथ को नमन, मिट जावे भव दुख माया॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

मैं पर का नहिं कर्त्ता होता, पर भी मेरा क्या करता।
निमित्त भाव से कर सकता पर, उपदान से क्या करता॥
पुण्योदय से आप कृपा से, भास रहा है आत्म स्वरूप।
पा जाऊँ अब निज प्रभुता को, छूट जाए यह भव दुःख कूप॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (सोरठा)

आठों दरव संवार, मन सुखदायक पावने।
जजों अरघ भर थार, विमल विमल शिवतिय रमण॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

आदि रहित सब द्रव्य हैं, ना हो इनका अंत।
गिनती इनकी अंत से, रहित अनन्तानंत॥
कर्त्ता इनका पर नहीं, ये न किसी के कर्म।
संत बने अरिहंत हो, जाना पदार्थ धर्म॥
अनन्त गुण पा कर दिया, अनन्त भव का अंत।
अनन्त सार्थक नाम तव, अनन्त जिन जयवंत॥
अनन्त सुख पाने सदा, भव से हो भयवंत।
अंतिम क्षण तक मैं तुम्हें, स्मरूँ स्मरें सब संत॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

अनन्तजी! भगवंत! आपने, अनन्त भव का अंत किया।
अनन्तगुण के धारी बनकर, अनन्तसुख को प्राप्त किया॥
सुरनर गणधर विद्याधर भी, तेरी स्तुति ना कर पाते॥
मेरे जैसे बालक तो फिर, मात्र देखते रह जाते॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (चामर)

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥
अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥

हमें अनन्तनाथ जी, बुलाइए अनन्त में।
अनन्त धर्म दीजिए, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान से।
अर्पित अर्घ्य महान, वंदन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

भव अनन्त का अंत करने को, सब दुःख कारण दूर किये।
बाह्याभ्यंतर छोड़ परिग्रह, शिव सुख से भरपूर हुए॥
सब जीवों के हित साधक वन, लक्ष्य दिया हि-पथ दाता।
प्रभु अनन्त के श्री चरणों में, अंतिम भव तक है माथा॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (पद्धरि)

वसु द्रव्य लेय श्रेष्ठ आत्म द्रव्य मिलाऊँ॥
अनन्तनाथ के चरण में शीघ्र चढ़ाऊँ॥
अनन्तज्ञान हेतु हे नाथ प्रार्थना करूँ।
सिद्ध पद के हेतु नाथ अर्चना करूँ॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (हरिगीतिका)

शुचि नीर चंदन शालिशंदन, सुमन चरु दीपा धरों।
अरु धूप फल जुत अरघ करि कर, जोरजुग विनती करों॥
जगपूज परम पुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनों।
शिव कंत वंत महंत ध्यावों, भ्रन्त वन्त नशावनों॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

जिससे बिछुड़े जुड़ सकें, रुदन रुके मुस्कान।
तन गत चेतन दिय सकें, वही धर्म सुख-खान॥
विरागता में राग हो, राग नाग विष त्याग।
अमृत पान चिर कर सकें, धर्म यही झट जाग॥
दया धर्म वर धर्म है, अदया भाव अधर्म।
अधर्म तज प्रभु धर्म ने, समझाया पुनि धर्म॥
धर्मनाथ को नित नमूँ, सधे शीघ्र शिव शर्म।
धर्म-मर्म को लख सकूँ, मिटे मलिन मम कर्म॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

धर्मनाथ तुम धर्म कर्म का, मर्म सभी को बता दिया।
पंचमहाव्रत पालन करके, पंचम-गति को प्राप्त किया॥
भक्ति-भाव से भगवन तेरी, भक्त भक्ति जब करता है।
अपार भव सागर तब उसका, मात्र चुल्लू भर रहता है॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (गीतिका)

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहो के, धर्म अपना सौकते॥
हाय! दर्शन तज प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।

धर्म की अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ायें, धर्म से हर काम हो।
जाप जय कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रमाण हो॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

धन्य धरा है धर्म तीर्थ से, धर्म देशना में आया।
अस्तिकाय है पंच सहित अरु, काल अकायामय गाया॥
सात तत्त्व औ नव पदार्थ हैं, लोक सहित आलोक कहा।
कथन किया श्री धर्मनाथ ने, प्रभु पद पंकज नमन रहा॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (आँचलीबद्ध)

शुभ भावों का अर्घ्य बनाय, पद अनर्घ जिनवर दर्षाय,
परम जिनराय, जय जय नाथ परम सुखदाय।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुण गाय,
परम जिनराय, जय जय नाथ परम सुखदाय॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (जोगीरासा)

आठों दरव साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई।
बाजत द्रम द्रम द्रम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई॥
परमधरम शम-शम-रमन-धरम जिन, अशरन शरन निहारी।
पूजों पाय गाय गुन सुंदर, नाचों दै दै तारी॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

सकलज्ञान से सकल को, जान रहे जगदीश।
विकल रहे जड़ देह से, विमल नमूँ नत शीश॥
कामदेव हो काम से, रखते कुछ ना नाम।
काम रहे ना कामना, तभी बने सब काम॥
बिना कहे कुछ आपने, प्रथम किया कर्तव्य।
त्रिभुवन पूजित आप्त हो, प्राप्त किया प्राप्तव्य।
शान्तिनाथ हो शांत कर, सातासाता शांत।
केवल केवल ज्योतिमय, क्लान्ति मिटे सब ध्वांत॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (त्रिभंगी)

अशान्ति नाशक, शान्ति प्रदायक, शान्तिनाथ अरहंत प्रभो।
त्रय पद धारक, शिव-पथ नायक, करो क्लेश मम शांत विभो॥
कल्पवृक्ष सम, कल्पित फल को, देते जग जन मानस को।
अक्षय सुख धन, प्राप्त किये जो, राज-राग तज आलस को॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (मालती)

जब-जब शांतविधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

इस वसुधा के अनेक गुण अरु, अनुपम निधि के हो स्वामी।
पंचम चक्रेश्वर बन करके, कामदेव हो जगनामी॥
धर्म तीर्थ के तीर्थ प्रवर्तक, तीर्थंकर बन शिवगामी।
तीनों पद को पाने वाले, नमता शान्तिनाथ स्वामी॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

बिन श्रद्धा के नाथ हजारों, मैंने अर्घ्य चढ़ाए हैं।
दिखा दिखाकर इस दुनियाँ को, धर्मी भी कहलाए हैं॥
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शान्तिनाथ प्रभु के चरणों में, पद अनर्घ पाने आया॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (त्रिभंगी)

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग-प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणा धारी, यातैं थारी शरनारी॥
श्री शान्ति जिनेशं, नुत शक्रेशं, वृष चक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुनधेशं, दया मृतेशं मक्रेशं॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

बाहर नहीं
वसंत बहार तो
संत! अंदर....

श्री कुन्थुनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

ध्यान अग्नि से नष्ट कर, प्रथम पाप परिताप।
कुंथुनाथ पुरुषार्थ से, बनने अपने आप॥
उपादान की योग्यता, घट में ढलती सार।
कुम्भकार का हाथ हो, निमित्त का उपकार॥
दीन दयाल प्रभु रहे, करुणा के अवतार।
नाथ अनाथों के रहे, तार सको तो तार॥
ऐसी मुझपे हो कृपा, मम मन मुझ में आय।
जिस विध पल में लवण हो, जल में घुल मिल जाय॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

षट् खण्डों के अधिपति बनकर, अनुपम वैभव भोग लिया।
निज वैभव का भान हुआ, जब जड़ वैभव को त्याग दिया॥
धर्मचक्र ले कर्म भूप को, धूल मूल में मिला दिया।
कुन्थुनाथ जी! इसलिए में, तव चरणों की शरण लिया॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (राज)

कुछ नहीं लाये चढ़ाने के लिए, आए अपनी ही सुनाने के लिए।
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं, ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला, अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला।
इसलिए यह अर्घ्य सौंने आपको, पूज्य कुंथुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

नहीं प्रशंसा में हर्षाते, निंदा में नहीं रोष करें।
शीलव्रतों का पालन करके, जिनने अपने दोष हरें॥
ब्रह्मरूप शिवपद को प्रभु ने, सतत् ध्यान से पाया है।
हर्षभाव से कुन्थुनाथ के, पद में शीश झुकाया है॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

पर द्रव्यों का भोग अभी तक, किया बहुत मैंने स्वामी।
पर पद की अभिलाषा में ही, जीवन व्यर्थ किया स्वामी॥
जड़ वैभव को चढ़ा आज, चैतन्य विभव पाने आए।
कुन्थुनाथ जिनराज शरण में, अर्घ्य बनाकर ले आए॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (विष्णु)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी।
फल जुत जजन करों मन सुखधरि, हरो जगत फेरी॥
कुन्थु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
भव सिन्धु परयो हो नाथ, निकरों बाँह पकर मेरी॥
प्रभु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुन अरज दासकेरी।
जगजाल परयों हो बेग, कनकारों बाँह पकर मेरी॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री अरनाथ (अरहनाथ) भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

चक्री हो पर चक्र के, चक्कर में ना आए।
मुमुक्षुपन जब जागता, बुभुक्षुपन भग जाए॥
भोगों का कब अंत है, रोग भोग से होए।
शोकरोग में हो अतः, काल योग का रोए॥
नाम मात्र भी नहीं रखो, नाम-काम से काम।
ललाम धरो नाम तव, अतः स्मरूँ अविराम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

तीर्थंकर पद कामदेव अरु, चक्रवर्ती पद पाकर भी।
अरहनाथ जी इन्हें त्यागकर, बने आत्मधन स्वामी जी॥
बिना राग की बिना द्वेष की, हित-मित तेरी यह वाणी।
मेरे जैसे अज्ञानी को, क्यों न करें केवलज्ञानी॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (शुद्ध गीता)

जमाने में उलझ कर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलासा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूले तो चढ़ा हम अर्घ्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (वीर)

समवसरण के मध्य प्रभु की, दिव्य ध्वनि का करके पान।
केवलज्ञानी अविनाशी की, सब करते क्यों वंदन गान॥
अंतरगुण को पाने हेतु, भक्त पुरुष करता गुणगान।
देवों के भी देव अरह जिन, नमस्कार करता धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (लय-माता तू...)

पद मद में हो आसक्त, निज पद को भूला।
जब हुआ दर्श अनुरक्त, मुक्तिद्वार खुला॥
अरनाथ जितेश महान, चरण शरण आया।
हो स्व-पर भेद विज्ञान, श्रद्धा उर लाया॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (त्रिभंगी)

शुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुल शीरं, पुष्प चरूँ।
वर दीपं धूपं, आनंद रूपं, ले भूपं अर्घ्य करूँ।
प्रभु दीन दयालं, अरिकुल कालं, विरद विशालं, सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे! जगपालं, अरगुन मालं, वरभालम्॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

बिना डाँट के
शिष्य और शीशी का
भविष्य ही क्या

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

क्षार-क्षार भर है भरा, रहित सार संसार।
मोह उदय से लग रहा, सरस सार संसार॥
बने दिगम्बर प्रभु तभी, अंतरंग-बहिरंग।
गहरी गहरी हो नदी, उठती नहीं तरंग॥
मोह मल्ल को मारकर, मल्लिनाथ जिनदेव।
अक्षय बनकर पा लिया, अक्षय सुख स्वयमेव॥
बाल ब्रह्मचारी विभो, बाल समान विराग।
किसी वस्तु से राग ना, तुम पद से मम राग॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

कामदेव ने काम अग्नि से, जला दिया है जग सारा।
इसे बुझाया कर में लेकर, शील झील के जलधारा॥
इस कारण की पूर्ण हुए हो, मल्लिनाथ अरहंत प्रभो।
शील स्वभावी मुझे बना दो, पाऊँ सर्वोत्तम सुख को॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (लय-जीवन है पानी की...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२] हम आज सजाये रे॥
भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥

जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)२, हम हरने आये रे।
मल्लि प्रभु की पूजा करने भाव बनाये रे॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

इस भव के भी पूर्ण भवों में, मन-वच-तन से जो धारा।
उस रत्नत्रय के पालन से, निज आतम को शृंगारा॥
बाल ब्रह्मचारी व्रतधारी, मल्लिनाथ जिनदेव महान।
प्रणाम करता भक्तिभाव से, मिट जावे भव दुःख महान्॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (अडिल्ल)

अर्घ्य अर्पण कर निज गुण में लीन रहूँ।
जिन समान ही शीघ्र नाथ अरिहंत बनूँ॥
मल्लिनाथ जिनवर के दर्शन मैं करूँ।
पूजन करके मुक्तिवधू को मैं वरूँ॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (जोगीरासा)

जल फल अरघ मिलाय गाय गुण, पूजों भगति बढ़ाई।
शिवपदराज हेतु हे श्रीधर, श्रवण गही में आई॥
राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा।
यातें शरन गही जगपति जी, पेग हरो भवपीरा॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

निज में यदि ही नियति है, ध्येय पुरुष पुरुषार्थ।
नियति और पुरुषार्थ का, सुन लो अर्थ यथार्थ॥
लौकिक सुख पाने कभी, श्रमण बनो मत भ्रात।
मिलें धान्य जब कृषि करे, घास आप मिल जात॥
मुनि बन मुनि पर में निरत, हो मुनि यति बिन स्वार्थ।
मुनि व्रत का उपदेश दे, हमको किया कृतार्थ॥
मात्र भावना मम रही, मुनिव्रत पाल यथार्थ॥
मैं भी मुनिसुव्रत बनूँ, पावन पाय पदार्थ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

द्रव्य भाव से मुनि बन करके, मुनिसुव्रत जी मोक्ष गए।
निश्चय अरु व्यवहार मार्ग का, बोध कराकर धन्य हुए॥
दुख से पीड़ित जीव जगत को, जिनवर मेरी यह वाणी।
सुख सिन्धु बन लहराती है, जन मानस को कल्याणी॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे! मुनिसुव्रत संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

लौकांतिक देवों के द्वारा, स्तुति सुनकर हे जिनराज।
निज स्वरूप में सिद्ध रूप लख, छोड़ दिया प्रभु ने गृह काज॥
सिद्ध नाम का सुमरण करके, पंचमुष्ठि कचलोंच किया।
मुनिव्रतधारी मुनिसुव्रत को, भक्ति भाव से नमन किया॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (हरिगीतिका)

निज आत्म वैभव का अतिशय, नाथ बतला दीजिए।
मम अर्घ को स्वीकार लो प्रभु, ज्ञानधार बहाइए॥
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव, सिंधु पार उतारिए॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (हरिगीतिका)

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरव अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरों॥
शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनंद भरन तारन, तरन विरद विशाल हैं॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

गुरु कृपा से
बाँसुरी बना मैं तो
ठेठ बाँस था

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

मात्र नग्नता को नहिं, माना प्रभु शिव-पंथ।
बिना नग्नता भी नहीं, पावो पद अरहंत॥
प्रथम हटे छिलका तभी, लाली हटती भ्रात।
पाक कार्य फिर सफल हो, लो तब मुख में भात॥
अनेकान्त का दास हो, अनेकान्त की सेव।
करूँ गहूँ मैं शीघ्र से, अनेक गुण स्वयमेव॥
अनाथ में जगनाथ हो, नमिनाथ दो साथ।
तब पद में दिन रात हूँ, हाथ जोड़ नत-माथ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

नीलगमन में नीलगगन सम, निरालम्ब नमि जिनवर जी।
निर्मल आसन नीलकमल से, स्पर्श करें ना पलभर भी॥
भोग-रोग को योग दवा से, मूल सहित तुम नाश किए।
तब पद में मैं तब पद पाने, आया हूँ यह आश लिए॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (शंभु)

हम अर्घ्य चढ़ाये गुण गायें, हम करें नमोऽस्तु जिन-सेवा।
क्या इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथ प्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (वीर)

मति श्रुत अवधि मन:पर्यय-मय, हुए सुशोभित हे जिनराज।
ऐसे प्रभु को दे आहार वह, राजा करता अद्‌भुत काज॥
जा घर रत्नों की वर्षा हो, दिव्य बधाई बजती द्वार।
ऐसे श्री जिन नमिनाथ को, भक्ति पूर्ण है नमस्कार॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

सारे पद जग के झूठे हैं, शाश्वत ना मिट जाते हैं।
शिवपद ही मन को भाया प्रभु, तुम सा कहीं न पाते हैं॥
मद का काम नहीं शिवपथ में, मम मद पूर्ण विनाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (अडिल्ल)

जलफलादि मिलाय मनोहरं,
अरघ धारत ही भव भय हरं।
जजतु हो नमिकें गुणगायकें,
जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

हीरा हीरा है
काँच काँच है किन्तु
ज्ञानी के लिये

नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

राज तजा राजुल तजी, श्याम तजा बलराम।
नम धाम धन मन तजा, ग्राम तजा संग्राम॥
मुनि बन वन में तप सजा, मन पर लगा लगाम।
ललाम परमातम भजा, निज में किया विराम॥
नील गगन में अधर हो, शोभित निज में लीन।
नील कमल आसीन हो, नीलम से अति नील॥
शील झील में तैरते, नेमि जिनेश सलील।
शील डोर मुझे बाँध दो, डोर करो मत ढील॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

दया हृदय से सुना आपने, पशुओं के आक्रन्दन को।
राज राजुल छोड़ चले झट, गिरनारी गिरि कन्दर को॥
धैर्य धरा पर ध्यान मेरु बन, ध्याया नित निज आतम को।
नेमि जिनेश्वर तुम्हें नमन कर, पाऊँ मैं परमातम को॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बंधन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

जीवों के आक्रन्दन को सुन, दया धर्म को कर वंदन।
राजमति अरु राजपाट को, जाना प्रभु ने भव बंधन॥
सबको छोड़ा था मुख मोड़ा, नाता शिव से जोड़ लिया।
है प्रणाम श्री नेमिनाथ को, सब जीवों को अभय दिया॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

कर्म शक्ति को क्षय करने प्रभु, चरण शरण में आया।
ध्रुव अनर्घपद पाने का अब, अपूर्व अवसर आया॥
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, शिवपथ मुझे दिखाना॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (लावनी)

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरव मिलाय।
अष्टम क्षिति के राजकरन कों, जजो अंग वसुनाय।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय दाता मोक्ष के॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

रिपुता की सीमा रही, गहन किया उपसर्ग।
समता की सीमा यही, ग्रहण किया उपसर्ग।
क्या-क्यों किस विध कब कहें, आत्म ध्यान की बात।
पल में मिटती चिर वसी, श्वांस-श्वांस पर वास।
मोह रमा की राज, खास दास की आस बस
पार्श्व करो मत दास को, उदारता का दास॥
ना तो सुर-सुख चाहता, शिवसुख की ना चाह।
तव थुति सरवर में सदा, होवे मत अवगाह॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

उपसर्गों के उपद्रवों को, उपकारी ही मान लिया।
क्षमा ढाल अरु तप असि लेकर, भव सेवा को हार लिया॥
चिंतामणि सम चिन्तित वस्तु, चिंतित जन को देते हैं।
पार्श्वनाथ जी तुम्हें देखकर, क्षमा सीख हम लेते हैं॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनायें, भक्त मूल्य इसका जाने।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय समक्ष, इच्छा पूरक भी माने॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भय हर! हे उपसर्ग विजेता! भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

आत्मध्यान में अचलमेरु सम, निज में निज को लीन किए।
बहुत किया उपसर्ग आप पर, कमठ बैर का भाव लिए॥
फैलाकर नागेन्द्र कणों को, दूर किया उपसर्ग महान।
हम उन पार्श्वप्रभु को करते, श्रद्धा से स्तुति गुणगान॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (हरिगीतिका)

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढाऊँ अर्घ्य में।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शरण में॥
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिये अपनाईए।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिए॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (चामर)

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिए।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ ते जजीजिए॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

हमारे दोष
जिनसे फले फूलें
वे बंधु कैसे?

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

१. (दोहा)

क्षीर रहो प्रभु नीर मैं, विनती करूँ अखीर।
नीर मिला लो क्षीर में, और बना दो क्षीर॥
अबीर हो तुम वीर भी, धरते ज्ञान शरीर।
सौरभ तुझ में भी भरो, सुरभित करो समीर॥
नीर निधि से धीर हो, वीर बने गंभीर।
पूर्ण तैरकर पा लिया, भवसागर का तीर॥
अधीर हूँ मुझे धीर दो, सहन करूँ सब पीर।
चीर-चीर कर चिर लखूँ, अन्दर की तस्वीर॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकमण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (ज्ञानोदय)

सघन रूप से फैल गया था, हिंसा का जब अंधियारा।
सत्य अहिंसा दया धर्म से, किया जगत में उजियारा॥
युगों-युगों तक महावीर जी, तव शासन जयवन्त रहे।
इस शासन में विद्या गुरु सम, सारे उत्तम सन्त रहें॥

ॐ ह्रीं समवसरणशोभित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित हैं पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं परमवीतरागी श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

अटके-भटके पतित जनों का, पाप पंक का क्षय सारा।
भवसागर में डूबत जन को, धर्म पोत देकर तारा॥
उन्हें निकाला दिया सहारा, वर्द्धमान जिन स्वामी ने।
नमता हूँ प्रभु के श्री पद में, जग के सुखकर स्वामी थे॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञदेव श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

५. (सखी)

पर को देखा मैंने, जिन को ही ना परखा।
अब सुख अनन्त पाने, संबंध तजूँ पर का॥
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रकट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी॥

ॐ ह्रीं हितोपदेशी श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (लय-चौबीसीवत्...)

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मद मोद धरो।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरो॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं शिवपुरवासी श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

उजाले में हैं
उजाला करते हैं
गुरु को बंदू

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

चौबीसों जिनराज के, समवसरण सुखकार।
पूजा लगे सुहावनी, गुण गाये संसार॥

(रोला)

गुण गाये संसार, भक्त हम करें नमोऽस्तु।
मंडल को विस्तार, शीघ्र हम करें जयोस्तु॥
दुनियाँ की क्या बात, मुक्ति खुद राह निहारे।
ऐसे जिनवर नाथ, दीजिए हमें सहारे॥1॥
आप सर्व सम्पन्न, मोह को नष्ट किए ज्यों।
अंतराय आवरण, कर्म भी नष्ट हुए त्यों॥
तीर्थंकर पद नाम, हुआ कर्मोदय जैसे।
शीघ्र बने भगवान, पूज्य अरिहंतों जैसे॥2॥
पाए केवलज्ञान, तभी इन्द्रासन डोले।
इन्द्र अवधि से जान, शीघ्र कुबेर से बोले॥
प्रभु पाए कैवल्य, रचो तुम समवस्त्रती को।
सुरपति का आदेश, पुण्य सुख दे धनपति को॥3॥
जाकर अतः कुबेर, नमोऽस्तु कर करें अर्चना।
समवसरण निर्माण, किए हैं सुन्दर रचना॥
जिसका वर्णन कौन, करें वचनों के द्वारा।
अतः कमा लो पुण्य, भक्ति की पाकर धारा॥4॥

(दोहा)

बारह योजन आदि का, क्रमशः घट घट अर्ध।
नेमिनाथ का डेढ़ हो, सवा पार्श्व का सर्ग॥

(सर्ग-रचना)

इक योजन का वीर का, समवसरण विस्तार।
हम तो सादर पूजते, यथाशक्ति सत्कार॥

(रोला)

यथाशक्ति सत्कार, करें हम जिनवर पूजा।
चौबीसों जिनराज, देव सा दिखे न दूजा॥
घाति कर्म को नाश, दोष अठारह जीते।
गुण धारे छ्यालीस, चिदातम का रस पीते॥
भक्त प्रार्थना समवसरण प्रभु हमको देना।
थामो भक्त पतंग, उड़ा शिवपुर तक देना॥
जड़ धन की क्या बात, आतमा का धन पाकर।
'सुव्रत' हों अर्हत, चरण-गुण प्रभु के गाकर॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(सोरठा)

महाजनों के मान्य, समवसरण चौबीस जिन।
हम अर्चक सामान्य, करते नमोऽस्तु रात दिन॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

जिनवाणी माँ का अर्घ्य

१. (वसन्ततिलका)

हे शारदे अब कृपा कर दे जरा तू।
तेरा उपासक खड़ा भव से डरा जो॥
माता विलम्ब करना मत में पुजारी।
आशीष दे बन सकूँ बस निर्विकारी॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

२. (वसन्ततिलका)

पीयूष है विषय सौख्य विरेचना है।
पीते सुशीघ्र मिटती चिर वेदना है॥
भाई जरा जनम रोग निवारती है।
संजीवनी सुखकारी जिन भारती है।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

३. (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

४. (वसन्ततिलका)

होकर विलीन जिसमें मन मोद पाते।
संसारी जीव भव वारिधि तैर जाते॥

श्री जैन शासन रे जयवन्त प्यारा।
भाई! यही शरण जीवन है हमारा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

५. (ज्ञानोदय)

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की।
शास्त्र पठन पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों की ॥
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञानदीप जलवा मेरा, भला करें जिनवाणी माँ ॥

(दोहा)

तत्त्व पदारथ द्रव्य का, जिनवाणी दे ज्ञान।
जन कल्याणी मात को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

६. (त्रिभंगी)

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनी, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

१. (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूँ ज्ञानध्यानतपोरताचार्य-गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

२. (आल्हा)

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाए, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूँ त्रिशताधिकदीक्षाप्रदातृ-आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

३. (ज्ञानोदय)

यूँ तो अपनी गुरु भक्ति का, इस दुनियाँ में अंत नहीं।
और सुनो धरती अम्बर में, जिनवाणी सम ग्रंथ नहीं ॥
णमोकार सम मंत्र नहीं है, मोक्षमार्ग सम पंथ नहीं।
संयमस्वर्ण महोत्सव धारी, विद्यागुरु सम संत नहीं ॥

(दोहा)

माथ रहे गुरु पाद में, हिय में गुरु का ध्यान।
हाथ करें गुरु वंदना, वचन करें गुरु गान ॥

ॐ ह्रूँ निर्ग्रन्थ-दिगम्बरमूर्ति-आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

४. (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रूँ विश्वकल्याणहितचिन्तकाचार्य-गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं।

५. (ज्ञानोदय)

ज्ञान के सागर विद्यासागर, ओजस्वी मम गुरु महान।
पंचम युग के महा तपस्वी, श्रेष्ठ गुरु का करें बखान॥
अष्ट द्रव्य से अष्ट गुणों को, गुरु से पाने आए हैं।
करें समर्पण श्री चरणों में, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं॥

ॐ ह्रूँ हितमितप्रियभाषा-शोभिताचार्य-गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

६. (ज्ञानोदय)

भावों की निर्मल सरिता में, अवगाहन करने आया हूँ।
मेरा सारा दुख दर्द हरो यह अर्घ्य भेंटने लाया हूँ॥
हे तपो मूर्ति हे आराधक, हे योगीश्वर हे महासंत।
है अरुण कामना देख सके, युग युग तक आगामी बसंत॥

ॐ ह्रूँ संतशिरोमणि आचार्य-गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

उन्हें जिनके
तन-मन नग्न हैं
मेरा नमन!

आचार्य श्री विद्यासागरजी पूजन

स्थापना

(दोहा)

गुरु बिन इस संसार में, कौन हरे मन मैल?
कौन पूर्ण इच्छा करे? कौन दिखाये गैल?

(ज्ञानोदय)

विद्या-गुरु तीर्थंकर जैसे, समवसरण सा संघ रहा।
बाल ब्रह्मचारी गुरु साधक, चौथे जैसा काल यहाँ॥
दर्शन पूजन को हम आए, थाल सजाकर द्रव्यों की।
मन मन्दिर में आन विराजो, लाज रखो गुरु भक्तों की॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

रोते-रोते हम जन्मे हैं, रो-रोकर ही मर जाते।
इसी रीति से हर जीवन को, व्यर्थ नष्ट हम कर जाते॥
या तो घर या मरघट देखा, देखा ना आतम अपना।
प्रासुक जल यह तुम्हें समर्पित, हरो हमारी भव-भ्रमणा॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

दुख से छुटकारा चाहें पर, दुखदायक ही कर्म करें।
सदा सुखी रखना चाहें पर, सुखदायक ना कर्म करें॥
भव ज्वाला में जलते-जलते, भव ज्वाला से घबराए।
अपने जैसी शीतलता को, चन्दन वन्दन को लाए॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भव - संसार नहीं क्षय होता, चारों गतियाँ सदा रहें ।

इनमें कभी नहीं हम अक्षय, इनमें सब ही दुखी रहें॥
तुम अक्षय-पद के अभिलाषी, बने दिगम्बर शिव-पन्थी।
तन्दुल से हम पूजन करते, अक्षय पद दो निर्ग्रन्थी!॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

प्यारा-प्यारा सुन्दर आतम, कामदेव की कर यारी।
शील स्वभाव नशाकर अपना, बना भिखारी संसारी॥
ब्रह्मचर्य धर यथाजात बन, कामदेव का दर्प हरा।
मेरा मुझसे मिलन करा दो, दिलवाओ गुरु रूप खरा॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी देह की भूख रुलाती, कभी-कभी मन तड़पाता।
षट्रस मिश्रित भोजन इनको, कभी तृप्त ना कर पाता॥
तप करके तुम ज्ञानामृत से, क्षुधा वेदनी नाश करो।
अपने में हम तुष्ट रहें गुरु, आओ उर में वास करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मय परिवार मोह राजा ने, हमें हराया पीटा है।
पर उसको संयम-सेना से, गुरुवर तुमने जीता है॥
सम्यक् संयम ज्ञान-दीप से, मोहबली को हम मारें।
ऐसा गुरु आशीष हमें दो, अघ अज्ञान तिमिर टारें॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागरमहामुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

दीन-हीन हम अटके भटके, अष्ट कर्म के कर्दम में।
चिदानन्द की मधुर गंध को, खोज सके ना आतम में॥

तुम चारित्र सुगन्ध लुटाते, मन-वच-तन से पावन हो।
कर्मों की दुर्गंध मिटाकर, सुरभित कर दो आतम को॥

ॐ ह्रीं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

हम छल बल से किलकिल करते, कल उसका फल दुखदायी।
तुम पल-पल में मंगल करते, फूल खिलें फल सुखदायी॥
जग का दल-दल फल बल तजकर, आप मचलते शिवफल को।
अकल लगा गुरु नकल करें हम, ऐसा मंगल संबल दो॥

ॐ ह्रीं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर महामुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

करतल जल वन्दन चन्दन है, अक्षत पूजन पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप श्रद्धा है, नियम धूप फल गुरु-भक्ति॥
यथा शक्ति से इन द्रव्यों को, भाव भक्तिमय हम लाएँ।
विद्या के सागर विद्या दो, शीश झुका हम गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

गुणाधार गुरुदेव हैं, भगवन् के प्रतिरूप।
दोष हरें निर्मल करें, दिलवाते शिवरूप॥

(ज्ञानोदय)

विद्याधर कर्नाटक वाले, तजकर गाँव बन्धु अपने।
ज्ञानसिन्धु से दीक्षा लेकर, चलते सच करने सपने॥
विद्याधर से विद्यासागर, गुरु ने यूँ ही बना दिया।
ज्ञान-ध्यान तप संयम द्वारा,वैरागी को सजा दिया॥१॥

गुरु के पदचिह्नों पर चलकर, यश-वैभव सुख कमा रहे।
और साधना सम्यक् करके, करम-भरम सब नशा रहे॥
करते हो उपकार सभी पर, रमते हो बस अपने में।
सबके उर में बस करके भी, दुख देते ना सपने में॥२॥
गुरु आधार सदा श्रद्धा के, सो सब जग ने पूजा है।
गुरुवर को भगवन् सा माना,गुरु जैसा ना दूजा है॥
हिन्दू गुरु को हरिहर कहते,और कहें शिवशंकर भी।
तथा सिक्ख गुरुनानक मानें, इस्लामी पैगम्बर ही॥३॥
हम भक्तों की अद्भुत श्रद्धा, तीर्थंकर जैसा कहते।
हम आधार सहित यह बोलें, इसका कारण अब कहते॥
वृषभनाथ सम धर्म बताते, अजितनाथ सम विजय दिये।
शंभवप्रभु सम जग त्यागी हो, अभिनन्दन सम अभय किये॥४॥
सुमतिनाथ सम सुमति विधायक, पद्मप्रभु सम खिले हुये।
सुपार्श्व प्रभु सम सुन्दर ज्ञानी, चन्द्रप्रभु सम धुले हुये॥
पुष्पदन्त सम वैरागी हो, शीतल प्रभु सम शीतल हो।
श्री श्रेयांशनाथ सम श्रेयश, वासुपूज्य सम मंगल हो॥५॥
विमलनाथ सम विमल धवल हो, अनन्त प्रभु सम भ्रान्ति हरो।
धर्मनाथ सम धर्मी मर्मी, शान्तिनाथ सम शान्ति करो॥
कुन्थुनाथ सम करुणावाले, अरहनाथ सम विरह हरो।
मल्लिनाथ सम मोह नशाते, मुनिसुव्रत सम राह करो॥६॥
नमीनाथ सम श्रेष्ठमान्य हो, नेमिनाथ सम पालक हो।

पार्श्वनाथ सम परिषह जेता, महावीर सम नायक हो॥
इन गुण को आधार बनाकर, तीर्थंकर जैसे कहते।
मंगल-मंगल जग कल्याणी, सबका मंगल तुम करते॥७॥
तुम्हें पुकारे 'सुव्रत' स्वामी, हृदय निलय में आ जाओ।
भाव भक्ति की इस गंगा को, गुरुवर पावन कर जाओ॥
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी, ठुकराओ या प्यार करो।
आज नहीं तो कल या परसों, जब चाहो भव पार करो॥८॥

ॐ ह्रूँ सर्वजीवहितोपदेशकाचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विद्यासागर गुरु रहे, सब जग के आधार।
भगवन् सम जयवन्त हों, हमें करें भव पार॥
गुरुपद में विश्राम हो, गुरुपद का हो ध्यान।
धन्य-धन्य जीवन बने, और मिले शिवधाम॥

(पुष्पांजलिं)

❑ ❑ ❑

सीना तो तानो
पसीना तो बहा दो
सही दिशा में

पद यात्री हो
पद की इच्छा बिन
पथ पे चलूँ